Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

काव्य मूल्यांकन: छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा जी के सन्दर्भ में

स्वाति जैन, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
डॉ. श्रीकांत शरण पाण्डेय, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश

छायावादी काव्यधारा मानववादी काव्यधारा थी। सृष्टि के कण-कण में व्याप्त सौंदर्य, प्रेम और शिवत्व में एक ही विराट तत्व प्रकट हो रहा है और इसी परम व्याप्त सत्य की तलाश छायावादी कवियों द्वारा की गई है। स्वाभावगत विकृति और संकीर्णताओं और व्यक्तिगत क्षुद्रता से मुक्त होकर छायावादी कवि विश्व मानवता की खोज में संलग्न दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध में छायावादी कवियित्री महादेवी वर्मा जी के काव्यों का मूल्यांकन किया गया है। छायावाद हिन्दी साहित्य का वह युग है जिसमें प्रेम, प्रकृति और आत्मसात रचनायें अपने समय का प्रतिनिधित्व कर रहीं थीं। छायावादी कवियों ने उपयोगितावाद का बहिस्कार किया और कल्पना का सहारा लेकर मानव हृदय की सुकुमार भावनाओं को वाणी प्रदान की। छायावादी कविताओं में मानव हृदय के सूक्ष्म- से सूक्ष्म भावों को स्थान मिलाने लगा। छायावाद मुख्यता प्रेरणा का काव्य रहा है और इसलिए वह कल्पना प्रधान भी रहा। महादेवी वर्मा इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवियित्री मानी जाती हैं। अध्ययन से पता चलता है कि- महादेवी जी रहस्य कवि, यथार्थवादी, गद्यकार, समन्वयवादी समालोचक होने के साथ-साथ ही वह अद्वितीय रेखाचित्रकार, संस्मरण लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबन्धकार, उच्चकोटि की चित्रकर्त्री और प्रबुद्ध समाज सेविका तथा राष्ट्रीय संस्कृति की संरक्षिका है। उनका समग्र काव्य साहित्य छायावादी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित है।

परिचय

छायावादी काव्य एक नई संवेदनशीलता का काव्य था। इस युग के कवि विशिष्ट अर्थ में संवेदनशील थे। महादेवी वर्मा के संदर्भ में उनका व्यक्तित्व अपनी इंद्रधनुषी आभा लिए उनके काव्य-लोक में उपस्थित होता है। इस प्रसंग में उनका नारी होना उनके पक्ष में जाता है। उन्होंने काव्य रचना को अत्यंत गंभीरता से लिया है। उनकी जीवन-दृष्टि मानवीय गुणों से सम्पृक्त और संवेदनाओं से अनुप्राणित है। उसमें उदात्त और गौरवमय भाव मिलते हैं और समस्त प्राणि-जगत के प्रति उनकी करुणा उमड़ी पड़ती है।

छायावादी युग भारतीय नवजागरण का काल था, जहाँ सभी स्तरों पर मुक्ति के लिए संघर्ष सक्रिय था। नारी भी अपनी मुक्ति की खोज में रत थी। महादेवी में मुक्ति की उड़ान स्पष्ट, असीम और अनंत है। उनमें नारी के अभिमानी रूप की अभिव्यंजना हुई है। मुक्ति की आकांक्षा भाषा के स्तर पर भी प्रकट होती है और शिल्प के स्तर पर भी। छायावादी भाव-बोध के लिए गीत आदर्श विधा बनकर आई। महादेवी ने अपने काव्य के लिए गीत विधा को ही चुना। वस्तुतः अपने गीत काव्य में महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना का सहज प्रत्यक्षीकरण हुआ है। अपने युग का अध्यात्म और

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भौतिकता का द्वंद्व उन्हें रहस्य का आवरण लेने को बाध्य करता है और वह अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रायः प्रतीक का सहारा लेती हैं।

महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थीं, अतः उनके काव्य में आत्मा-परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। वे स्वयं लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है।

इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेवी इस वेदना को उस दुःख की भी संज्ञा देती हैं, "जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है" (किंतु विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाला दुःख सामान्यतया लौकिक दुःख ही होता है, जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करुण रस का स्थायी भाव होता है। महादेवी ने इस दुःख को नहीं अपनाया है।

वे कहती हैं, "मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं। एक वह, जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बाँध देता है और दूसरा वह, जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है"**[1]** किंतु, उनके काव्य में पहले प्रकार का नहीं, दूसरे प्रकार का 'क्रंदन' ही अभिव्यक्त हुआ है। यह वेदना सामान्य लोक हृदय की वस्तु नहीं है। संभवतः इसीलिए रामचंद्र शुक्ल ने उसकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है, "इस वेदना को लेकर उन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखीं, जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना, यह नहीं कहा जा सकता"। **[2]**

इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सूक्ष्म और विवृत्त भावानुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है। डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी तो उनके काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य-पीड़ा से भी बढ़कर मानते हैं।

प्रकृति चित्रण

अन्य रहस्यवादी और छायावादी कवियों के समान महादेवी जी ने भी अपने काव्य में प्रकृति के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्हें प्रकृति में अपने प्रिय का आभास मिलता है और उससे उनके भावों को चेतना प्राप्त होती है। वे अपने प्रिय को रिझाने के लिए प्रकृति के उपकरणों से अपना श्रृंगार करती हैं-

शशि के दर्पण में देख-देख, मैंने सुलझाए तिमिर केश।
गूँथे चुन तारक पारिजात, अवगुंठन कर किरणें अशेष।

छायावाद और प्रकृति का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। महादेवी जी के अनुसार- 'छायावाद की प्रकृति, घट-कूप आदि से भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों से प्रकट एक महाप्राण बन गई। स्वयं चित्रकार होने के कारण उन्होंने प्रकृति के अनेक भव्य तथा आकर्षक चित्र साकार किए हैं। महादेवी जी की कविता के दो कोण हैं- एक तो उन्होंने चेतनामयी प्रकृति का स्वतंत्र विश्लेषण किया है-'

'कनक से दिन मोती सी रात, सुनहली सांझ गुलाबी प्रात

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मिटाता रंगता बारंबार कौन जग का वह चित्राधार?'

अथवा 'तारकमय नव बेणी बंधन शीश फूल पर शशि की नूतन

रश्मि वलय सित अवगुंठन धीरे-धीरे उतर क्षितिज से

आ वसंत रजनी।'

दूसरा प्रकृति को भाव-जगत का अंग मानकर उन्होंने मुख्यतः रहस्य साधना का चित्रण किया है। कवयित्री को अनंत के दर्शन के लिए क्षितिज के दूसरे छोर को देखने की जिज्ञासा है-

'तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है?

जा रहे जिस पथ से युगलकल्प छोर क्या है?'

उन्होंने समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। 'सांध्यगीत' में वे अपने जीवन की तुलना सांध्य-गगन से करती हैं-

'प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन यह क्षितिज बना धुँधला विराग

नव अरुण अरुण मेरा सुहाग छाया-सी काया वीतराग'

उनकी कविता में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है। सौंदर्य भावना भी छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति थी। महादेवी ने न केवल इसे अंगीकार किया, अपितु अपने काव्य में इसे महत्वपूर्ण, चित्ताकर्षक रूपाकार देकर समाहित भी किया। उन्होंने सौंदर्य के सूक्ष्म रूप को प्रतिष्ठित और चित्रित किया हैउनकी सौंदर्य दृष्टि प्रकृति और मानव दोनों की ओर आकृष्ट होती है।

'सौंदर्य की उदभाविका' महादेवी वर्मा सौंदर्य की अद्भुत चितेरी हैं। उन्होंने अखिल ब्रह्माण्ड में सौंदर्य के दर्शन किए हैं और इस अनुभूति से गुज़रते हुए. उन्होंने इसके विविध रूपों का चित्रांकन अपनी लेखनी से किया है। उनका काव्य सौंदर्य की खान है और उनके गीतों में सौंदर्य के विविध रूपों की छवियाँ बिखरी पड़ी हैं। यहाँ उनकी सौंदर्यानुभूति की व्यापकता को समेटना संभव नहीं होगा और न ही यह हमारा अभीष्ट है। यहाँ हम महादेवी वर्मा के काव्य में प्राप्त उस विराट सत्ता, प्रकृति और नारी के सौंदर्य पर ही दृष्टिपात करेंगे।

महादेवी ने सर्वत्र एक विराट सत्ता के दर्शन किए हैं। इसी अरूप पुरुष का दिव्य सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता है और वे उसी. के चिस्-सौंदर्य से प्रभावित होकर उसका गुणगान करती हैं। यह सौंदर्य उन्हें प्रकृति के प्रत्येक उपकरण, प्रत्येक उपादान में दिखाई देता है। इसलिए प्रकृति की सुषमा का वर्णन उनके संदर्भ में एक परम प्रिय के सौंदर्य का वर्णन ही है। इसीलिए उनकी सौंदर्यानुभूति में रहस्यात्मकता की उपस्थिति दिखाई देती है।

महादेवी क्योंकि प्रकृति के समस्त उपकरणों, समस्त व्यापारों में उस दिव्य सौंदर्य के हो दर्शन करती हैं, इसलिए उन्होंने प्रकृति के सभी उपादानों, सभी रूपों का चित्रण अपनी कविताओं में किया है।

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से

आ वसन्त रजनी!

तारकमय नव वेणी-बन्धन,

शीशफूल कर शशि का नूतन

रश्मि वलय, सित घन अवगुंठन

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मुक्ताहल अभिराम बिछा दे चितवन से अपनी
'दिशा का चंचल
परिमल अंचल चित्रहार से बिखर पड़े ससि
जुगनू के लघु हीरक के कण!'
'विधु की चाँदी की थाली।
मादक मकरंद भरी सी।
जिसमें उजियारी रातें
लुटती छलती मिसरी सी।'
हँस देता जष प्रात, सुनहरे
अंचल में बिखरा रोली।।
लहरों की बिछलन पर जब
मचली पड़ती किरणें भोलीं।।
तब कलियाँ चुपचाप उठा कर पल्लवों के बूंघट सुकुमार,
छलकी पलकों से कहती हैं कितना मादक है संसार!

प्रकृति के उपर्युक्त मनोहर रूपों के अतिरिक्त महादेवी की कविताओं में हमें प्रकृति का उग्र, शुष्क रूप भी देखने को मिलता है :

'घोर तम छाया चारों ओर,
घटाएँ घिर आई घन घोर
वेग मासत का है प्रतिकूल,
हिले जाते हैं पर्वत-मूल,
गरजता सागर बारम्बार..
बह गई क्षितिज की रेखा
मिलती है कहीं न हेरे,
भूला सा मत्त समीरण
पागल-सा देता फेरे!
'मर्मर का रोदन कहता है
कितना निष्ठुर है संसार?'

किंतु, महादेवी क्योंकि प्रकृति के प्रत्येक उपकरण, प्रत्येक रूप में उस दिव्य पुरुष के सौंदर्य के ही दर्शन करती हैं, इसलिए प्रकृति का कोई भी रूप उन्हें विचलित नहीं करता। उन्हीं के अनुसार – 'प्रकृति का शांत रूप जैसे मेरे हृदय में एक चंचल लय-सी भर देता है, उसका रौद्र रूप वैसे ही आत्मा को प्रशांत स्थिरता देता है। अस्थिर रौद्रता की प्रतिक्रिया ही संभवतः मेरी एकाग्रता का कारण रहती है मेरे निकट आँधी, तूफान, बादल, समुद्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं जिनके चित्र अनायास बनते हैं और बना लेने पर स्थायी आनंद प्राप्त होता है।'

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महादेवी ने अपनी व्यक्तिगत प्रणयानुभूति और वेदनानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया। जो कुछ वह सीधे-सीधे अप्रत्यक्ष रूप में नहीं कह सकती थीं, प्रकृति का आवरण ले लेने पर वही सब कुछ वह अत्यंत सहज, सरल ढंग से कह जाती हैं।

'उड़ उड़ कर जो धूल करेगी
मेघों का नभ में अभिषेक
अमिट रहेगी उसके अंचल
में मेरी पीड़ा की रेख।'
'चिर विरह-मिलन पुलिनों की ।
सरिता हो मेरा जीवन
प्रतिपल होता रहता हो
युग-कूलों का आलिंगन।'
'तुम्हें बाँध पाती सपने में
पावस घन सी उमड़ बिखरती
शरद निशा-सी नीरव घिरती।

छायावादी कवियों के प्रकृति चित्रण की एक अनूठी विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोपण किया। वह चाहे प्रसाद हों, सुमित्रानंदन पंत, या फिर निराला – सभी प्रकृति की सुंदरता में किसी स्त्री स्वरूप की कल्पना करते हैं। निराला ने स्वीकार भी किया है कि 'कोमलता लाने के लिए स्त्री स्वरूप की कल्पना से बढ़ कर और कौन-सी कल्पना होगी।' महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नहीं हैं। बल्कि छायावाद युग में स्त्री की नव प्राप्त छवि और स्वतंत्रता से प्रेरित होकर, स्वयं स्त्री होने के नाते महादेवी ने नारी-मुक्ति की चेतना को कहीं अधिक सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। महादेवी ने जो रूपक बाँधे हैं, उनमें अधिकतर प्रकृति पर नारी रूप का आरोपण ही मिलता है –

'रूपसि तेरा घन केशपाश,
कंपित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन है सद्यःस्नात।
भीगी अलकों के छोरों से चूती बूंदें कर विविध लास।
सौरभ भीना झीना गीला लिपटा मृदु अंजन-सा दुकूल।
चल अंचल से झर-झर झरते पथ में जुगनू के स्वर्ण।

'एक और उदाहरण–

'चौंकी निद्रित रजनी अलसित
श्यामल पुलकित कंपित कर में ।
दमक उठे विद्युत के कंकण।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वर्ण्य विषय

समस्त मानव जीवन को वे निराशा और व्यथा से परिपूर्ण रूप में देखती थीं। वे अपने को नीर भरी बदली के समान बतलाती -

मैं नीर भरी दुख की बदली।

विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना।

परिचय इतना इतिहास यही- उमड़ी थी कल मिट आज चली।

महादेवी जी के प्रेम वर्णन में ईश्वरीय विरह की प्रधानता है। उन्होंने आत्मा की चिरंतन विकलता और ब्रह्म से मिलने की आतुरता के बड़े सुंदर चित्र संजोए हैं-

मैं कण-कण में डाल रही अलि आँसू के मिल प्यार किसी का।

मैं पलकों में पाल रही हूँ, यह सपना सुकुमार किसी का।

'अग्निरेखा` में दीपक को प्रतीक मानकर अनेक रचनाएँ लिखी गयी हैं। साथ ही अनेक विषयों पर भी कविताएँ हैं। महादेवी वर्मा का विचार है कि अंधकार से सूर्य नहीं दीपक जूझता है-

रात के इस सघन अंधेरे में जूझता सूर्य नहीं, जूझता रहा दीपक!

कौन सी रश्मि कब हुई कम्पित, कौन आँधी वहाँ पहुँच पायी?

कौन ठहरा सका उसे पल भर, कौन सी फूँक कब बुझा पायी।।

अग्निरेखा के पूर्व भी महादेवी जी ने दीपक को प्रतीक मानकर अनेक गीत लिखे हैं- किन उपकरणों का दीपक, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, सब बुझे दीपक जला दूँ, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, पुजारी दीप कहाँ सोता है, दीपक अब जाती रे, दीप मेरे जल अकम्पित घुल अचंचल, पूछता क्यों शेष कितनी रात आदि।

महादेवी छायावाद के कवियों में औरों से भिन्न अपना एक विशिष्ट और निराला स्थान रखती हैं। इस विशिष्टता के दो कारण हैं - एक तो उनका कोमल हृदया नारी होना और दूसरा अंग्रेज़ी और बंगला के रोमांटिक और रहस्यवादी काव्य से प्रभावित होना। इन दोनों कारणों से एक ओर तो उन्हें अपने आध्यात्मिक प्रियतम को पुरुष मानकर स्वाभाविक रूप में अपना स्त्री - जनोचित प्रणयानुभूतियों को निवेदित करने की सुविधा मिली, दूसरी ओर प्राचीन भारतीय साहित्य और दर्शन तथा संत युग के रहस्यवादी काव्य के अध्ययन और अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन छायावादी कवियों के काव्य से निकट का परिचय होने के फलस्वरुप उनकी काव्याभिव्यंजना और बौद्धिक चेतना शत-प्रतिशत भारतीय परंपरा के अनुरूप बनी रही। इस तरह उनके काव्य में जहाँ कृष्ण भक्ति काव्य की विरह-भावना गोपियों के माध्यम से नहीं, सीधे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित हुई हैं, वहीं सूफी पुरुष कवियों की भाँति उन्हें परमात्मा को नारी के प्रतीक में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

कल्पना, भावना और पीड़ा

महादेवी जी की सृजन-प्रक्रिया विशुद्ध भावात्मक रही है। उनकी धारणाओं को युग के विभिन्न वाद परिवर्तित नहीं कर सके हैं। उन्होंने किसी एक दर्शन को केंद्र नहीं बनाया। जिसे जीवन अथवा समाज के लिए उपयुक्त समझा उसे आत्मसात कर लिया। महादेवी जी विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की पोषक होने के कारण उनकी समस्त काव्य

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कृतियों में उसका प्रभाव परिलक्षित होता है। वे छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती है और प्रकृति को उसका साधन मानती हैं- 'छायावाद ने मनुष्य हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीनकाल से बिंब प्रतिबिंब के रूप में चला आ रहा था, जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुःख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।' उन्होंने छायावाद का विवेचन करते हुए प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध का प्रतिपादन विशेष रूप से किया है। इसके साथ ही उन्होंने सूक्ष्म या अंतर की सौंदर्य वृत्ति के उद्घाटन पर बल दिया है।

महादेवी की कविता अनुभूति से परिपूर्ण है, पंत और निराला की कवितायें दार्शनिकता के बोझ से दब-सी गई हैं, किंतु महादेवी जी के काव्य में ऐसी बात नहीं। उसमें दार्शनिकता होते हुए भी सरसता है। वह सर्वत्र भावना प्रधान है। महादेवी जी के काव्य में संगीतात्मकता का विशेष गुण है। वे गीत लेखिका हैं। गीतों की लय छंदों पर उनका अद्भुत अधिकार हर जगह दिखाई देता है। वे महादेवी माधुर्य भाव की उपासिका हैं। ब्रह्म को उन्होंने प्रियतम के रूप में देखा है। अपने प्रेमपात्र के लिए उन्होंने 'प्रिय' संबोधन दिया है। उनके गीत उज्ज्वल प्रेम के गीत हैं। इसके द्वारा अपने अंतर की जिस सात्विकता का उन्होंने परिचय दिया है वह उनकी काव्य-गरिमा का आधार स्तंभ है। जब जीवन में दिव्य प्रेम के मधु संगीत के रागिनी झंकृत हुई तब कवयित्री के मन में उसने असंख्य नए स्वप्नों को जन्म दिया-

'इन ललचाई आँखों पर पहरा था जब व्रीड़ा का
साम्राज्य मुझे दे डाला उस चितवन ने पीड़ा का।'

चिर तृषित आत्मा युग-युग से सर्वविश्वव्यापी परमात्मा से मिलन के लिए व्याकुल रही है। महादेवी जी की वेदनानुभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। 'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ' कहकर वे इसी विरह को जीवन की साधना मानती है। उन्होंने पीड़ा की महत्ता ही घोषित नहीं की उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। उनके सुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हैं। जब दुःख अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है तब वही दुःख सुख का रूप धारण कर लेता है।

'चिर ध्येय यही जलने का ठंडी विभूति हो जाना
है पीड़ा की सीमा यह दुख का चिर सुख हो जाना'

छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके हृदय का भावकेन्द्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ, छूट छूटकर झलक मारती रहती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वे रहना चाहती हैं। उसके आगे मिलनसुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं। वे कहती हैं कि – मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ। इस वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी हैं जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं आर कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता।

एक पक्ष मेा अनंत सुषमा, दूसरे पक्ष में अपार वेदना, विश्व के छोर हैं जिनके बीच उसकी अभिव्यक्ति होती है—

यह दोनों दो ओरें थीं संसृति की चित्रपटी की
उस बिन मेरा दुख सूना मुझ बिन वह सुषमा फीकी।
पीड़ा का चसका इतना है कि —
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुममें ढूँढूगी पीड़ा।**[3]**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वे दुःख को जीवन की स्फूर्ति तथा प्रेरणा तत्व मानती हैं। उनकी दृष्टि में वेदना का महत्व तीन कारणों से है- वह अंतःकरण को शुद्ध करती है। प्रिय को अधिक निकट लाती है और प्रियतम की शोभा भी उसी पर आधारित है। अतः उनके काव्य में दुःख के तीन रूप मिलते हैं निर्माणात्मक, करुणात्मक और साधनात्मक। वे बौद्धों के नैराश्यवाद को स्वीकार नहीं करतीं। उन्होंने दुःख को मधुर भाव के रूप में स्वीकार किया है जिसमें वह अलौकिक प्रिय के लिए दीप बनकर जलना चाहती है-

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल, प्रियतम का पथ आलोकित कर।'

उनके अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है जो समस्त विश्व को एक-सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख यष्टिपरक न होकर समष्टिपरक रहा है। उन्होंने कहा है व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है।उनका संदेश है- **[4]**

'मेरे हँसते अधर नहीं, जग की आँसू लड़ियाँ देखो,
मेरे गीले पलक छुओ मत मुर्झाई कलियाँ देखो।'

महादेवी का रहस्यवाद

छायावादी काव्य में एक आध्यात्मिक आवरण तथा छाया रही है। अतः रहस्यवाद छायावादी कविता के प्रवृत्ति विशेष के लिए प्रयुक्त किया गया। महादेवी जी के अनुसार 'रहस्य का अर्थ वहाँ से होता है जहाँ धर्म की इति है। रहस्य का उपासक हृदय में सामंजस्यमूलक परमतत्व की अनुभूति करता है और वह अनुभूति परदे के भीतर रखते हुए दीपक के समान अपने प्रशांत आभास से उसके व्यवहार को स्निग्धता देती हैं।' महादेवी जी की रुचि सांसारिक भोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर अधिक दर्शित होती हैं। रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ उनके काव्य में लक्षित होती हैं। जिज्ञासा, आस्था, अद्वैतभावना, प्रणयानुभूति विरहानुभूति।

महादेवी जी में उस परमत्व को देखने की, जानने की निरंतर जिज्ञासा रही हैं। वह कौतूहल से पूछती हैं-

'कौन तुम मेरे हृदय में
कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित?'

उनकी अज्ञात प्रियतम के प्रति आस्था केवल बौद्धिक न होकर रागात्मक है-

'मूक प्रणय से सधुर व्यथा से स्वप्नलोक के से आह्वान
वे आए चुपचाप सुनाने तब मधुमय मुरली की तान।'

आत्मा और परमात्मा के अद्वैतत्व के लिए 'बीन और रागिनी' का प्रतीक उनकी अभिनव कल्पना एक सुंदर उदाहरण है। उनकी यह भावना कोरे दार्शनिक ज्ञान या तत्व चिंतन पर आधारित नहीं है अपितु उसमें हृदय का भावात्मक योग भी लक्षित होता है-

'मैं तुमसे हूँ एक-एक है जैसे रश्मि प्रकाश
मैं तुमसे हूँ भिन्न-भिन्न ज्यों घन से तड़ित विलास।'

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जब छायावादी कवियों की, और उनमें भी विशेषकर महादेवी वर्मा की बात आती है तो रहस्यवाद की चर्चा अनिवार्य हो जाती है। एक अर्थ में द्वंद्व इस काल का प्रधान गुण था। यहाँ यथार्थ और आदर्श का द्वंद्व था तो इतिहास और मिथक का द्वंद्व भी, वर्तमान और अतीत का द्वंद्व था तो वास्तविकता और अध्यात्म का भी द्वंद्व था। इस अंतिम द्वंद्व ने विशेष रूप से छायावादी रचनाकार को रहस्यवाद की ओर मोड़ दिया। महादेवी के संदर्भ में कुछ आलोचक व्यक्तिगत एकाकीपन और अभाव को भी रहस्यानुभूति का कारण मानते हैं। जो भी हो, महादेवी और रहस्यवाद एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। महादेवी वर्मा की रहस्य भावना एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं।

रहस्यवाद जीवात्मा की उस अंतर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन है, जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल संबंध जोड़ना चाहती है और यह संबंध यहाँ तक बढ़ जाता है कि दोनों में कोई अंतर नहीं रह जाता। (डॉ.रामकुमार वर्मा)

काव्य में आत्मा की मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है।(जयशंकर प्रसाद)

इस आलोक में हम महादेवी वर्मा की कविताओं में रहस्यानुभूति की उपस्थिति का आकलन करें तो भी यही प्रमाणित होता है कि वह सर्वत्र, और प्रत्येक उपादान तथा प्रकृति-व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन करती हैं। वह उसके साथ तादात्म्य, साक्षात्कार को व्याकुल दिखाई देती हैं। यहीं से उनके काव्य में रहस्य की सृष्टि होती है। वह स्वयं को प्रकृति (का ही कोई अंग) मानकर उस दिव्य सत्ता से मिलन को तत्पर रहती हैं। महादेवी स्वयं कहती हैं – 'हमारे मूर्त और अमूर्त जगत एक-दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि एक यथार्थदर्शी दूसरे को रहस्यदृष्टा बनकर ही पूर्णता पाता है।' (मेरे प्रिय निबंध रहस्यवाद) उनका नारी होना इस रहस्य भाव को और भी गहन करता है।

वे एक रागात्मक संबंध स्थापित करती हैं उस परम पुरुष के साथ – 'जब असीम से हो जाएगा' 'मेरी लघु सीमा का मेल' यही आत्म-समर्पण उनका पावन लक्ष्य है। आत्मा-परमात्मा के रागात्मक संबंध के इस पक्ष की व्याख्या करते हुए वह स्वयं कहती हैं – 'समर्पण के भाव ने ही आत्मा को नारी की स्थिति दे डाली।

सामाजिक व्यवस्था के कारण नारी अपना कुल-गोत्र आदि परिचय छोड़कर पति को स्वीकार करती है और स्वभाव के कारण उसके निकट अपने आपको पूर्णतः समर्पित कर उसपर अधिकार पाती है। अतः नारी के रूपक से सीमाबद्ध आत्मा का असीम में विलय होकर असीम हो जाना सहज ही समझा जा सकता है।' (साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध)

महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर यदि हम सतर्क दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनके काव्य में रहस्यवाद के सभी चरणों की अभिव्यंजना हुई है। उनमें, कौतुहल और जिज्ञासा रहस्यानुभूति का सबसे पहला चरण होता है। मानव किसी चकित शिशु-सा जब ब्रह्मांड के विराट लीला व्यापार को देखता है तो वह बस चकित होकर रह जाता है और जब उसकी बुद्धि कोई भी व्याख्या प्रस्तुत नहीं कर पाती तो वह रहस्य में डूब जाता है। 'किस शिल्पी ने अनजान। विश्व प्रतिमा कर दी निर्माण' महादेवी भी चकित हो सोचती हैं और प्रश्न करती हैं – 'प्रथम प्रणय की सुषमा सा / यह कलियों की चितवन में कौन? ' चकित मानव को हर ओर एक परम सत्ता के ही दर्शन होते हैं और वह उसकी एक झलक पाने को आतुर रहता है। महादेवी वर्मा ने भी प्रकृति के विविध उपादानों में इस अलौकिक प्रियतम को ही देखा है और इन्हीं को देख कर उसके अपार सौंदर्य की कल्पना की है – 'चितवन तन-श्याम रंग, / इन्द्रधनुष भृकुटि भंग, / विद्युत का अंग

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राग / दीपित मृदु अंग-अंग, / उड़ता नभ में अछोर । तेरा नवनील चीर।' इस परम प्रिय के परोक्ष दर्शन कर कवयित्री उससे मिलन के लिए उत्कंठित हो जाती है।

भाषा-शैली

महादेवी जी का कुछ प्रारंभिक कविताएँ ब्रजभाषा में हैं, किंतु बाद का संपूर्ण रचनाएँ खड़ी बोली में हुई हैं। महादेवी जी की खड़ी बोली संस्कृत-मिश्रित है। वह मधुर कोमल और प्रवाह पूर्ण हैं। उसमें कहीं भी नीरसता और कर्कशता नहीं। वैसे महादेवी जी की भाषा सरल है, किंतु सूक्ष्म भावनाओं के चित्रण में वह संकेतात्मक होने के कारण कहीं-कहीं अस्पष्ट भी हो गई हैं। शब्द चयन अत्यंत सुंदर है, किंतु भाषा में कोमलता और मधुरता लाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों का अंग-भंग अवश्य मिलता है। जैसे- आधार का अधार, अभिलाषाओं का अभिलाषें आदि।

महादेवी जी की शैली में निरंतर विकास होता रहा है। 'नीहार' में उनकी शैली प्रारंभिक अवस्था में है। इस प्रारंभिक अवस्था की शैली में भाव कम हैं, शब्द अधिक। 'नीरजा' की शैली में भाव और भाषा की समानता है। 'दीपशिखा' की रचना में उनकी शैली प्रौढ़ हो गई है और थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की क्षमता आ गई है।

भावों को मूर्त रूप देने में महादेवी जी अत्यंत कुशल थीं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रतीकों और संकेतों का आश्रय अधिक लिया है। अतः उनकी शैली कहीं-कहीं कुछ जटिल और दुरूह हो गई है और पाठक को कविता का अर्थ समझने में कुछ परिश्रम करना पड़ता है।

रस, छंद, अलंकार, शिल्प और प्रतीक

महादेवी की कविता वियोग-श्रृंगार प्रधान है। वियोग के जैसे रहस्यमय चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, वैसे अत्यंत दुर्लभ हैं। करुण रस की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। उनके काव्य में सभी छंद मात्रिक हैं। और वे अपने आप में पूर्ण हैं। उनमें संगीत और लय का विशेष रूप से समावेश है। अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक है और अलंकारों का प्रयोग भावों को तीव्रता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है।**[5]** (समानोक्ति, उपमा, रूपक, अलंकारों की अधिकता है। शब्दालंकारों की और महादेवी जी की विशेष रुचि नहीं प्रतीत होती फिर भी क्यों कि उनके गीत उनकी अव्यहत साहित्य-साधना के परिणाम हैं अतः कलागीतों के सभी शैल्पिक गुणों से युक्त हैं। उनके काव्य में छायावादी कविता के शिल्प विधान का सफल रूप द्रष्टव्य है। गीतिकाव्य के तत्व अनुभूति प्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, संक्षिप्तता, भावान्वित, गेयता आदि उनके काव्य में पूर्णतः दर्शित होते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है, 'सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने-चुने शब्दों में वर्णन करना ही गीत है।' अभिव्यक्ति की कलात्मकता, लाक्षणिकता, स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म उपमानों का ग्रहण, कोमलकांत पदावली, कल्पना का वैभव, चित्रात्मकता, प्रतीक विधान, बिंब योजना आदि कलातत्वों का उनकी कविता में पूर्ण अभिनिवेश है। उनकी शिल्प प्रतिभा अनुपम है। उनके अंतस का कलाकार कला के प्रति सर्वदा सचेष्ट रहा है। उदारण के लिए

'निशा को धो देता राकेश चाँदनी में जब अलकें खोल
कली से कहता यों मधुमास बता दो मधुमदिरा का मोल।'

बिंबात्मकता-

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'मोती-सी रात कनक से दिन
गुलाबी प्रात सुनहली साँझ।'

'दीप' महादेवी के काव्य का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसके अतिरिक्त बीन और रागिनी, दर्पण और छाया, धन और दामिनी, रश्मि और प्रकाश उनके काव्य में बार-बार आए हैं। डॉ. नगेंद्र के शब्दों में "महादेवी के काव्य में हमें छायावाद का अभिमिश्रित रूप मिलता है। तितली के पंखों, फूलों की पंखुरियों से चुराई हुई कला और इन सबसे ऊपर स्वप्न-सा बुना हुआ एक वायवीय वातावरण- ये सभी तत्व जिसमें घुले-मिले रहते हैं वह है महादेवी की कविता।

महादेवी की कविता में वेदना भाव

महादेवी वर्मा की कविता में दुःख और करुणा का भाव प्रधान है। वेदना के विभिन्न रूपों की उपस्थिति उनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। वह यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करतीं कि वह 'नीर भरी दुःख की बदली' हैं। वस्तुतः समूचा छायावादी काव्य ही व्यक्तिवाद का प्रभाव लेकर चला और वहाँ आत्माभिव्यक्ति को सहज ही स्थान मिला। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी 'हिंदी साहित्य की भूमिका में लिखते हैं – '**1900-1920** ई. की खड़ी बोली की कविता में कवि के अपने राग-विराग की प्रधानता हो गई। विषय अपने आप में कैसा है यह मुख्य बात नहीं थी, बल्कि मुख्य बात यह रह गई थी कि विषयी (कवि) के चित्त के राग-विराग से अनुरंजित होने के बाद वह कैसा दिखता है। विषय इसमें गौण हो गया, विषयी प्रधान।'

जहाँ तक महादेवी वर्मा का प्रश्न है, उनकी वेदना के उद्गम के बारे में निश्चित तौर पर कुछ कहना संभव नहीं है। उनके एक गीत की पंक्ति है – 'शलभ मैं शापमय वर हूँ / किसी का दीप निष्ठुर हूँ।' उनके पूरे काव्य पटल पर इस तरह के असंख्य बिम्ब बिखरे पड़े हैं, जिनसे उनके अंतस में पलती अथाह पीड़ा का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक विचित्र-सा सूनापन, एक विलक्षण एकाकीपन बार-बार उनकी कविताओं में उमड़ता दिखाई देता है। अल्पायु में ही विवाहित होने के बाद, उन्होंने स्वेच्छा से एकांत जीवन का चयन किया। डॉ.नगेन्द्र का मानना है कि उनके जीवन में जो एकाकीपन था वह किसी अभाव की देन था। पीड़ा का साम्राज्य ही उनके काव्य-संसार की सौगात है – 'साम्राज्य मुझे दे डाला । उस चितवन ने पीड़ा का।' विफल प्रेम का यह रुदन महादेवी के काव्य की अंतर्वस्तु है। यह पीड़ा ही कवयित्री का प्रारब्ध है – 'मेरी मदिरा मधुवाली / आकर सारी ढुलका दी । हंस कर पीड़ा से भर दी / छोटी जीवन की प्याली।'

महादेवी की वेदना अनुभूतिजन्य होने के कारण उनकी कविताओं में इसकी अभिव्यक्ति भी अत्यंत सहज ढंग से हुई है। उसमें कृत्रिमता कहीं दिखाई नहीं पड़ती। वह कितनी सहजता से कह देती हैं – 'रात सी नीरव व्यथा / तम सी अगम मेरी कहानी।' किंतु, यहाँ हमें यह तथ्य ध्यान में रखना होगा कि महादेवी के काव्य में अभिव्यंजित दुःख और वेदना जैसे भाव आरोपित बिल्कुल नहीं हैं, इनका वरण तो कवयित्री ने स्वयं किया है। उनका यह कथन इस वक्तव्य की पुष्टि करता है – 'हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहँचा सकें, किंतु हमारा एक बूंद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।' (यामा । अपनी बात) निष्ठुर दीप-सी तिल-तिल जलती कवयित्री अपने काव्य में इस व्यक्तिगत व्यथा को शब्द देने में संकोच नहीं करती।

किंतु, महादेवी की वेदना नितांत वैयक्तिक भी नहीं है। स्वयं उन्होंने अपने जीवन में दुःख और अभाव की बात से इंकार किया है। वस्तुतः उनके वेदना-भाव का प्रासाद दो आधार-भूमियों पर टिका हुआ है – आध्यात्मिक भावभूमि

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तथा मानवतावादी भावभूमि। दोनों आधारभूमियाँ परस्पर अन्योन्याश्रित हैं।' (डॉ. सुषमा पाल / छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि)। बौद्ध धर्म के अध्ययन और उसके प्रति उनके रुझान ने भी महादेवी के वेदना-भाव के लिए आध्यात्मिक भावभूमि तैयार की। महादेवी ने दुःख को आध्यात्मिक स्तर पर ही अपनाया। भारतीय संस्कारों में पगी महादेवी करुणा-भाव में आकंठ डूबी हुई हैं। वेदना की अधिकता उन्हें अध्यात्म का आवरण लेने को बाध्य करती है। किसी दार्शनिक की तरह वह कह उठती हैं – 'विजन वन में बिखरा कर राग, । ज्गा सोते प्राणों की प्यास, / ढालकर सौरभ में उन्माद नशीली फैलाकर विश्वास, / लुभाओ इसे न मुग्ध वसन्त! / विरागी है मेरा एकान्त!' और, 'मैं क्यों पूछु यह विरह निशा / कितनी बीती क्या शेष रही?' तथागत की महाकरुणा का प्रभाव इन पंक्तियों में देखा जा सकता है – 'अश्रुकण से डर सजाया त्याग हीरक हार, / भीख दुःख की माँगने जो फिर गया प्रति द्वार / शूल जिसने फूल छू चन्दन किया सन्ताप, / सुनो जगाती है उसी सिद्धार्थ की पदचाप, / करुणा के दुलारे जाग!'

जब व्यक्ति वेदना के अनुभव से गुज़र चुकता है और उसकी तीव्रता के दंश सह चुकता है तो वह पराई पीर को उसी धरातल पर खड़े होकर रामझ सकता है। यहीं से उसमें समग्र मानव जाति के दुःखों के प्रति सहानुभूति और करुणा के भाव जन्म लेते हैं। महादेवी के वेदना-भाव-प्रासाद की दूसरी आधारभूमि मानवतावादी भावभूमि है। मानव मात्र के प्रति करुणा का प्रत्यक्षीकरण महादेवी के गद्य लेखन में देखा जा सकता है। पद्य के क्षेत्र में, 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' तक आते-आते उनकी वेदना को मानव मात्र के प्रति करुणा का रूप लेते देखा जा सकता है। इस दृष्टि से 'दीपशिखा' महादेवी की अनुपम कृति है। इसी संग्रह की ये पंक्तियाँ देखिए, जहाँ कवयित्री की चिंता केवल मनुष्य नहीं, तन्वंगी पक्षियों के प्रति भी प्रकट होती है – 'पथ न भूले एक पग भी । घर न खोए लघु विहग भी । स्निग्ध लों की तूलिका से । आँक सबकी छाँह उज्ज्वल।' महादेवी वर्मा व्यापक सृष्टि के पक्ष में अपने स्वयं के दुःख, अपनी वेदना को भी तिरोहित करने को तैयार रहती हैं। एक कविता में वह कहती हैं –

मेरे बंधन नहीं आज प्रिय,
संसृति की कड़ियाँ देखो
मेरे गीले पलक छुओ मत,
मुरझाई कलियाँ देखो।'

एक अन्य कविता में, सुमन के माध्यम से वह वंचितों, शोषितों की उपेक्षा से क्षुब्ध होकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं –

कर दिया मधुर और सौरभ ।
दान सारा एक दिन ।
किंतु रोता कौन है ।
तेरे लिए दानी सुमन?'

अब, एक और उदाहरण देखिए –

कह दे माँ क्या देखें।
देखें खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तेरी चिर-यौवन सुषमा
या जर्जर जीवन देखू।

डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में – '(महादेवी वर्मा) की करुणा व्यक्तिपरक अथवा आत्मगत ही नहीं है। वह बहिर्मुखी एवं समाजपरक भी है, जिसका प्रमाण उनकी अनेक गद्य रचनाएँ, बंगाल के दुर्भिक्ष से संबंधित काव्य संकलन की भूमिका आदि है।

महादेवी की कविता में प्रणय की अनुभूति

प्रणय की अभिव्यक्ति को छायावादी कविता में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। कुछ आलोचक तो समूचे छायावादी काव्य को ही 'प्रेम काव्य' की संज्ञा देते हैं। छायावाद का काव्य भारतीय नारी के नवोत्थान का काव्य था, जब वह समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए संघर्ष कर रही थी, अपने पारम्परिक रूढ़िगत बंधनों को तोड़ने का यत्न कर रही थी और रथ की व्यावहारिक सहचरी बनने की दिशा में अग्रसर हो रही थी। उधर पुरुष को भी यह लगने लगा था कि स्त्री को उसके विशुद्ध रूप में समझा जाना चाहिए। स्त्री-पुरुष संबंध इस युग में अपने लिए नए आयामों की खोज करता दिखाई देता है। युगीन संशय और द्वंद्व से प्रेम की अनुभूति भी अछूती नहीं रहती।

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम एक पूल भाव के रूप में प्रकट हुआ है। उनका प्रेम अशरीरी है। यह करूणा से आप्लावित प्रेम है। अलौकिक दिव्य सत्ता के प्रति उनकी इस प्रणयानुभूति में दाम्पत्य प्रेम की झलक भी मिलती है, और लौकिक स्पर्श का आभास भी। महादेवी की कविता में व्यक्त प्रेम इसलिए भी विशिष्ट है, क्योंकि यह एक स्त्री की लेखनी से किया गया स्त्री-मनोभावों का चित्रण है। उनमें स्त्रियोचित लाज-संकोच है तो अपने युग की नवजागृत नारी का अहं भी है। वह विरह की आग में तपती हैं तो संयोग की छाँह से भी स्वयं को दूर नहीं रखना चाहतीं। इस प्रकार, उन्होंने प्रणय की विविध स्थितियों का भरपूर आनंद लेते हुए अपनी कविताओं में इनका गहन चित्रण किया है। यह प्रेम वासना-रहित प्रेम है जिसमें उदात्तता का भाव प्रचुरता से मिलता है। महादेवी ने प्रेम के मधुर रूप का चयन किया है। उनका प्रेम प्राकृतिक सौंदर्य से आप्रभावित है। इस संदर्भ में, उनका स्वप्न-द्रष्टा होना भी 'एक उल्लेखनीय विशेषता है।

महादेवी वर्मा सहज प्रेम की सहज गायिका हैं। प्रणय उनकी कविता का मूल भाव है। उन्होंने प्रेम के मधुर रूप का चयन किया, क्योंकि माधुर्य को वह प्रेम का महत्वपूर्ण गुण मानती हैं। उनका कहना है –'हृदय के अनेक रागात्मक संबधों में माधुर्यमूलक प्रेम ही उस सामंजस्य तक पहुँच सकता है जो सब रेखाओं में रंग भर सके; सब रूपों को सजीवता दे सके और आत्म-निवेदन को इष्ट के साथ समता के धरातल पर खड़ा कर सके।' यहाँ छायावादी साहचर्य का भाव द्रष्टव्य है। मधुरता की इस अनुभूति के दर्शन उनकी कविताओं में अनेक स्थानों पर होते हैं। उदाहरणार्थ, ये पंक्तियाँ देखिए – 'अंधेरों से झरता स्मित पराग, / प्राणों में गूंजा नेह-राग, / सुख का बहता मलयज समीर! / धुल-धुल जाता यह हिमदुराव, / गा-गा उठते चिर मूक भाव, / आली सिहर-सिहर उठता शरीर!

महादेवी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए, उसी से उनकी प्रणयानुभूति का उद्भव हआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रहीं। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक होता ही है। फिर अपार, अथाह, असीम सौंदर्य किसके हृदय को प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा? यह देखिए –

'चुभते ही तेरा अरुण बान

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बहते कन-कन से फूट-फूट,
मधु के निर्झर से सजल गान!
इन कनक रश्मियों में अथाह
लेता हिलोर तम-सिन्धु जाग
बुदबुद-से बह चलते अपार,
उसमें विहगों के मधुर राग।'

वह इस मधुरता, इस अथाह सौंदर्य से प्रभावित तो अवश्य होती हैं और उनमें प्रणय भावना भी हिलोर मारती है, किंतु उन्हें यह आभास नहीं होता कि उनका यह इष्ट प्रेमी है कौन –

'कौन तुम मेरे हृदय में?
कौन मेरी कसक में नित
मधुरता भरता अलक्षित?
कौन प्यासे लोचनों में
घुमड़ घिर झरता अपरिचित?
किंतु, फिर वह यह भी कहती हैं –
'जो न प्रिय पहचान पाती,
किसलिए पावस नयन में,
प्राण में नगतक बसाते,
दौड़ती क्यों प्रति शिरा में,
प्यास विद्युत सी तरल बन,
क्यों किसी के आगमन के, ।
शकुन स्पन्दन मैं मनाती? '

यह संशय व्यक्तिगत है अथवा युगीन यह समझना कठिन नहीं है। उनमें अपने इस अलौकिक प्रिय से मिलने की अति तीव्र इच्छा है। वह कहती हैं – 'जो तुम आ जाते एक बार! / कितनी करुणा, कितने संदेश / पथ में बिछ जाते बन पराग। / गाता प्राणों का तार-तार / अनुराग भरा उन्माद राग, / आँसू लेते वे पद पखार।' प्रिय से मिलने की आकांक्षा में वह शृंगार भी करती हैं – 'शशि के दर्पण में देख देख, / मैंने सुलझाए तिमिस्केश, / गूंथे चुन तारक-पारिजात, । अवगुंठन कर किरणे अशेष।' इसी प्रकार प्रणय के अनेकानेक मनोभावों के चित्रण उनकी कविताओं में भरे पड़े हैं। वहाँ स्त्री-सुलभ लाज-संकोच के भी दर्शन होते हैं – 'सरल तेरा मृदु हास, / अकारण यह शैशव का हास, / बन गया कब कैसे चुपचाप, / लाज-भीनी सी मृदु मुस्कान!' तो नारी के छायावाद युगीन अभिमानी रूप की अभिव्यंजना भी मिलती है – 'कब दिवस का अग्निशर । मेरी सजलता बेध पाया, / तारकों ने मुकुट बन / दिग्भ्रान्त कब मुझको बनाया? / ले गगन का दर्प रज में उतार सहज निखर चली मैं!'

अन्य छायावादी कवियों के समान महादेवी वर्मा भी स्वप्न-द्रष्टा हैं। यथार्थ में मिलन न होने पर भी वह स्वप्न में अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति कर लेती हैं। उन्होंने स्वप्न के माध्यम से अनेक गीतों में अपनी प्रणयानुभूति को

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्त किया है। ऐसा ही एक उदाहरण देखिए – 'पल भर का वह स्वप्न तुम्हारी । युग-युग की पहचान बन गया।' किंतु, वह सपनों के मिलन को भ्रम अथवा मिथ्या कल्पना नहीं मानतीं, उनके निकट सपने का मिलन भी यथार्थ है। वह कहती हैं – 'कैसे कहती हो सपना है, । अलि! उस मूक मिलन की बात? / भरे हुए अब तक फूलों में / मेरे आँसू उनके हास!'

प्रेम कितना भी गहन, तीव्र, प्रगाढ़, निश्छल और माधुर्यमूलक हो, विरह की अपरिहार्यता तो संभावित रहती ही है। संपूर्ण जीवन को 'विरह का जलजात' मान लेने वाली महादेवी ने निश्चय ही विरह की व्यथा को साक्षात् भोगा होगा। इस विचार के समर्थन में हम शचीरानी गुर्टू का यह कथन यहाँ उद्धृत करना चाहेंगे – 'यौवन के तूफानी क्षणों में जब उनका अल्हड़ हृदय किसी प्रणयी के स्वागत के लिए मचल रहा था और जीवन गगन के रक्ताभ पट पर स्नेह-ज्योत्सना छिटकी पड़ रही थी तभी अकस्मात विफल प्रेम की धूप खिलखिला पड़ी और पुलकते प्राणों में धूमिलिका अस्पष्ट रेखाएँ-सी अंकित कर गई।' प्रसंगवश, महादेवी के दो काव्य संकलनों – 'नीहार' ; और 'नीरजा' में उनकी पूर्ण प्रणय कथा के संकेत मिलते हैं।

उपसंहार

महादेवी जी रहस्य कवि, यथार्थवादी, गद्यकार, समन्वयवादी समालोचक होने के साथ-साथ ही वह अद्वितीय रेखाचित्रकार, संस्मरण लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबन्धकार, उच्चकोटि की चित्रकर्त्री और प्रबुद्ध समाज सेविका तथा राष्ट्रीय संस्कृति की संरक्षिका है। उनका समग्र काव्य साहित्य छायावादी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित है । 'नीहार' महादेवी की सर्वप्रथम प्रकाशित मौलिक कृति है। इसके गीतों में जिज्ञासा की भावना विश्व की परिर्वतनशीलता से उत्पन्न पीड़ा की विवृत्ति और अनुभूति के आवेग में असीम एवं पीड़ा का तादात्म्यानुभव, प्रभृति की व्यंजना है। महादेवी जी अपने इस काव्य संग्रह के बारे में स्वयं कहती है कि 'नीहार' के रचनाकाल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कुतूहल- मिश्रित वेदना उमड़ आती थी जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य सुनहली उषा और स्पर्श से दूर सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है। आधुनिक काव्य में आध्यात्मिक अभियान का यह प्रथम चरण है क्योकि रहस्य साधना की खोज और इस पथ की पीड़ा का उभार 'नीहार' में स्पष्टतः लक्षित होता है। 'नीहार' में प्रतीकात्मक रूप के अनुरूप ही एक धूमिल विषादपूर्ण वातावरण की संसृष्टि है। इसमें अज्ञात आराध्य की उपासना और अज्ञात लोक का आह्वान है। जिसमें हृदय के भावों की अस्पष्टता प्रतिबिंवित है। इसमें साधना का मार्ग भी अस्पष्ट है जिसमें मानसिक विषाद और पीड़ा की विवृत्ति है। 'नीहार' में कवयित्री का जिज्ञासु चिन्तन अनुभूति में भीगकर गत्यात्मक सृष्टि की सुषमा में डूब गया है।

जिस प्रकार 'नीहार' के धुँधलेपन को रश्मि अनावृत कर प्रकाश की मुस्कान और प्रसन्नता की लहर विखेरती है वैसे ही रश्मि की रचनाओं में अभिनव आह्लाद है। इसमें हृदय के धुंधले भाव चिन्तन की किरणों में दृश्यमान हो उठे हैं। 'रश्मि' में महादेवी की अनुभूति का अन्तर्दर्शन है। 'रश्मि' के गीतों में चिन्तन का रागात्मक अन्वेषण सर्वत्र परिलक्षित होता है। 'रश्मि' में उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों को दर्शन का दृढ़ आधार मिल जाता है। 'नीहार' का धुँधलापन निखर उठता है। जिज्ञासा और कुतुहल की अधिकता इसमें भी है पर इसके समाधान दृढ़ और अडिग है । 'रश्मि' की प्रकृति विस्मय की सृष्टि करने वाली न होकर कवि व्यक्तित्व के सापेक्ष हो जाती है। रश्मि का आह्लादात्मक बोध वेदना

को माधुर्य से मण्डित, करने में सक्षम है। इसकी रहस्यानुभूतियाँ स्पष्ट और साधना समर्थित हैं । भावुकता प्रौढ़ दार्शनिकता में परिवर्तित हो चुकी है। अज्ञात का आकर्षण ज्यों का त्यों बना है, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति के विभिन्न स्वरों में सामंजस्य की गरिमा बढ़ गयी है ।

'नीरजा' अनुभूति के उत्कर्ष और कलात्मक मनोरमता के साथ हिन्दी गीति-काव्य के चरम विकास की भूमिका पर प्रतिष्ठित है । गीतों की दृष्टि से 'नीरजा' हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठतम रचना है। 'नीरजा' में चिंतन और अनुभूति भाव और अभिव्यक्ति तथा गीत और संगीत का अद्भुत समन्वय है। 'रश्मि की किरण - चेतना का आरोहण क्रम 'नीरजा' में समात्मभाव के उस शिखर पर पहुँच जाता है। जो महादेवी के काव्य की प्रतिष्ठाभूमि और आध्यात्मिक उन्मेष का प्रतीक है । 'नीरजा' की प्रणय-भूमि का अन्तर्मुखी भावसमष्टि के व्यापक धरातल पर अभिव्यक्त सान्ध्यगीत महादेवी के काव्य संचरण का चतुर्थ सोपान है। इसमें प्रेयसी-प्रियतम के प्रणय सम्बन्धों में दृढ़ता का भाव अन्तभूर्त है। सान्ध्यगीत की कविताओं में मानवीय चेतना का प्रकृति से तादात्म्य और रंगीन सौन्दर्य की मनोरम छटा देखते ही बनती है। संयोग और वियोग दोनों ही स्थितियों में अभेद की स्थिति है फिर भी निजत्व का भाव 'सान्ध्यगीत' की कविता की आत्मा है। 'सान्ध्यगीत' तक पहुँचते-पहुँचते उनका भाव पथ निश्चित हो चुका है और कवयित्री ने अपनी निश्चित दिशा खोज ली है। सापेक्षताओं से ऊपर उठकर कवयित्री इतनी निर्द्वन्द्व हो गयी है कि उनके लिये और तो और जीवन मृत्यु का पार्थक्य भी मिट गया है। समन्वय और सामंजस्य से ऊपर उठने का भावयोग सान्ध्यगीत की चरम उपलब्धि है वस्तुतः सान्ध्यगीत काव्य, संगीत और चित्र के समन्वित स्वरूप से आलोकित है।

महादेवी के काव्य संचरण का अंतिम चरण है- दीपशिखा । दीप आत्मा एवं शिखा साधना की निरन्तर गतिशील निष्ठा का प्रतीक है। 'दीपशिखा' में कामनाओं का आवेग, उत्कर्ष की उदात्त भावना में परिवर्तित है। जिसमें व्यक्तिगत लालसा न होकर समष्टिगत आनन्द की कल्पना का अन्तर्भाव है। ससीम - असीम की सृष्टि में अपने व्यक्तित्व-समर्पण से स्वर्ग-सुख की उत्पत्ति का इच्छुक है । उसका दृढ़ विश्वास है कि उसकी नश्वरता व्यापक भूमि पर अमरता ही है जो सदैव सृष्टि में प्रतिविम्बत रहेगी ।

सन्दर्भ सूची

1. वर्मा, महादेवी. रश्मि. पृ॰ 7.
2. वर्मा, धीरेन्द्र (1985). 'हिंदी साहित्य का इतिहास'. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ 719
3. शुक्ल, रामचन्द्र (संवत 2038). हिन्दी साहित्य का इतिहास (उन्नीसवां संस्करण). काशी, भारत: नागरी प्रचारिणी सभा. पृ॰ 487.
4. वांजपे, प्रो शुभदा (2006). पुष्पक (अर्ध-वार्षिक पत्रिका) अंक-6. हैदराबाद, भारत: कादम्बिनी क्लब. पृ॰ 116-117.
5. भाषा रत्नाकर. इलाहाबाद: नवीन प्रकाशन मंदिर. 1968. पृ॰ 312